VOL- IX | ISSUE- VII | JULY | 2022 | PEER REVIEW e-JOURNAL | IMPACT FACTOR 7.331 | ISSN 2349-638x

वृद्ध - समस्याओं पर क्रियात्मक पहल — 'नए घर में अम्मा'

प्रोफ़ेसर डॉ किशोर पवार
हिंदी विभाग
दहिवडी कॉलेज दहिवडी
त. माण जि. सातारा 415508
महाराष्ट्र

प्रस्तावना -

जीवन का उत्तर काल प्रत्येक के लिए वृद्धत्व, उसकी समस्याएं, तीव्रता लेकर आता है. यह वृद्धत्व और उसकी स्थिति, समस्याएं सार्वजनीन, सार्वकालिक व सर्वविदित हैं; इससे लगभग कोई नहीं बच सकता. वृद्धत्व का प्रतिबिम्बन साहित्य की कहानी, उपन्यास, कविता आदि विविध विधाओं में होता रहा है. साथ ही फिल्म, नाटक, वृत्तचित्र आदि माध्यमों से हम तक इसकी सुखद — दुखद अवस्थाओं, कथाओं का प्रस्तुतिकरण होता रहा है. भावुक व्यक्ति वृद्ध समस्याओं को देखकर, अनुभव कर द्रवित होते हैं. परन्तु आये दिन वृद्धत्व से सम्बंधित दिल दहलाने वाले समाचार हमें माध्यमों से प्राप्त होते ही हैं.

साहित्य विधाओं में वृद्ध समस्याओं का चित्रण अब एक नएव विमर्श के रूप में उभरता नजर आ रहा है. कोई भी विषय प्रथमत: एक विषय, एक समस्या के रूप में सम्मुख आता है, आवश्यकता निश्चित ही यह होती है कि समाधान की ओर उन्मुख हो, समस्या से समाधान की ओर उभरना; साहित्य व शोध में क्रमप्राप्त होता है. किन्तु अधिकतर इस दूसरे और महत्वपूर्ण चरण की अनदेखी होती रहती है. यहाँ विशेषत: हम चर्चा कर रहे हैं; वृद्ध विमर्श में दूसरे और क्रियात्मक चरण की, सकारात्मक बाजू की. वृद्ध विमर्श की सकारात्मक बाजू संभवत: अभी अल्प मात्र में प्रकाश में आई है. अभी हमने वरिष्ठ कथाकार श्याम जांगिड (आप राजस्थानी व हिंदी साहित्य के बहुमुखी व प्रतिभाशाली रचनाकार हैं.) की "नवल काका" इस वृद्ध समस्या वाली कथा पर आलेख लिखा है. ये कथा मार्च २०२१ के हंस में प्रकाशित हुई है. इसी अंक में वृद्ध विमर्श का दूसरा पहलू "नए घर में अम्मा" इस कहानी के रूप में प्रकाशित हुआ है. 'नए घर में अम्मा' यह कहानी युवा कहानीकार सुश्री योगिता यादव जी की लिखी है. जितनी 'नवल काका' यह कहानी सशक्त है, उतनी ही 'नए घर में अम्मा' भी सशक्त कहानी है. दोनों रचनाओं का प्रभाव हमें लिखने के लिए प्रेरक रहा. आगे विशिष्ठ बिन्दुओं के साथ हम इसके विश्लेषण का प्रयास करेंगे. फिलहाल कहानीकार से परिचय कर लें.

कहानीकार परिचय - सुश्री योगिता यादव आपका जन्म १९८१ में दिल्ली में हुआ. 'आपने राजनीति शास्त्र व हिन्दी स्नातकोत्तर शिक्षा प्राप्त की है. आपके 'क्लीन चिट, गलत पते की चिट्ठियां' ये दो कहानी संग्रह, 'खाव्हिशों के खांडव वन' यह उपन्यास, 'आस्था की अर्थव्यवस्था' नामक सामाजिक - सांस्कृतिक लेख संग्रह प्रकाशित हैं.' 1. 'आपने 'हाशिए उलांघती औरत' पत्रिका के जम्मू-कश्मीर विशेषांक का संपादन, 'सार्थक नव्या' के जम्मू-कश्मीर विशेषांक का संपादन किया है. आपने भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय से जूनियर फैलोशिप प्राप्त की है.

शब्द संकेत — ***अ) नया घर*** = *शक्ति, नवजीवन, सकारात्मक ऊर्जा का प्रतीक है. बेसहारा, अकेली अम्मा अपने घर, छत की समस्या से चिंतित हैं. गाँव की मानवतावादी, नई प्रधाननी उनकी अवस्था, समस्याओं आदि से संवेदित होकर उन्हें नया पक्का घर, नल, गैस जैसी सारी सरकारी सुविधाएँ बना देती हैं.* ***आ) नए घर में अम्मा*** = *नई शिक्षा, अवसर और परिवर्तन के साहस द्वारा एक बूढ़ी, असहाय, अपमानित स्त्री अब सुदृढ़, युवा, शक्तिशाली रूप में परिवर्तित अनुभूत होती हैं. यह एक नव संकल्पना भी प्रयुक्त होती लगती है.*

अनुसन्धान पद्धति - 'नए घर में अम्मा' वृद्ध समस्यों पर क्रियात्मक पहल — इस शीर्षक के अंतर्गत हम विवेच्य कहानी पर विमर्श करने का प्रयास करेंगे. प्रस्तुत अनुसन्धान के लिए हम विवेचन पद्धति का उपयोग कर रहे हैं.

'नए घर में अम्मा' कहानी कथानक - *'नए घर में अम्मा'* यह वृद्धा की सफलता वाली कहानी है. जैसे प्रेम कथा से हटकर साहित्य में केन्द्रीय पात्र युवावस्था से निराले भी होते हैं; यहाँ अम्मा यह पात्र केन्द्रीय है; जिसे हम प्रस्तुत कहानी की नायिका कह सकेंगे. वर्तमान में अम्मा कूबड़ से दोहरी वृद्धा है. वे नि:संतान हैं. उनके पति की मृत्यु के बाद अकेली हुई हैं. धूप - बारीश की समस्याओं वाला उनका अपना टूटा-फूटा - सा घर है. वे गुड संग अपनी रोटी खाने वाली थी. उनकी रोटी कुत्ता उठा ले गया है, अब किसी भतीजेवाली बहू से दो रोटी की चाह में निकली अम्मा की पीठ पर रामेश्वर चढ़ बैठा. अम्मा लुढक पडी, कीचड से धोती गीली हुई. बिसेसर की बहू रेखा ने उन्हें, जैसे हर महिला उन्हें डुकरिया कहकर गाली देती हैं; उसने भी गली दी, फिर उठने में उनकी सहायता की. रेखा ने उन्हें दो रोटी भी खिलाई. सरकारी योजना से उन्हें पक्के घर के लिए वह प्रधाननी से मिलने की सलाह देती है. अम्मा प्रधाननी के घर पहुँचती हैं. वहां के ताम — झाम, लोगों की उपस्थिति से अपनी बोलती बंद अवस्था व सलीके से बात की आवश्यकता को सोच कर वे वापस अपने घर लौटती हैं.

प्रधाननी के घर अम्मा की आव भगत होती है. अबकी बार उन्हें अपनी दुखभरी स्थिति प्रधाननी से कह - बताने का अवसर मिलता है. जिसका प्रभाव व परिणाम प्रधाननी पर होता है. नई और समाज सुधारवादी दृष्टि वाली प्रधाननी अम्मा को नया घर दिलाने की ठान लेती हैं. जिससे अम्मा का विश्वास बढ़ता है. प्रधाननी के घर से कभी अम्मा के लिए खाना आता है. अब बहुओं में अम्मा प्रसिद्ध हो गई. प्रधाननी ने उनसे कहा कि उनके (अम्मा के) खेत किसी को बटाई पर लगवाएगी, जिससे आधी फसल आएगी व उनके खेत वाले कटहल के पेड़ खजाने हैं. योजनानुसार घर के लिए उनके कागज, फोटो तैयार कर लिए जाते हैं. देखते ही देखते अम्मा का पक्का घर बन गया, नल लग गया, शौचालय बन गया. उन्हें अब चूल्हा फूंकने की आवश्यकता न होगी, जल्द ही उनका गैस वाला चूल्हा भी लगेगा. नए घर में अम्मा नई सुविधाओं से युक्त बन गई. पोता हरीश अम्मा से फिर बुरी हरकत करने आता है, अबके अम्मा में संचरित शक्ति ऊर्जावान हो फूट पड़ती है. घबराया हरीश भाग जाता है, पर अम्मा अपने नए घर में नवयुवती, नवदुर्गा बनी दिख पड़ती है. अम्मा के इस शक्तिशाली रूप को देख रेखा मुस्काती हुई उन्हें गरम रोटी का निमंत्रण देती है.

'नए घर में अम्मा' कहानी का कथ्य - यह वृद्ध विमर्श की सकारात्मकता वाली कहानी है. इसे निम्न मुद्दों के आधार पर विवेचित किया जा सकेगा -

1) ***साधारण गृहस्थी व नियति के स्वीकार की भूमिका वाली अम्मा*** — अम्मा अपने पति बाबा के साथ साधारण - सा गृहस्थ जीवन जीने का स्वीकार करती हैं. बाबा से उन्हें भले ही ज्यादा लाड न मिला, परन्तु वे दोनों आपस में सुख — दु:ख बाँट लेते थे. अत: उनका जीवन स्वर्ग न सही, नर्क भी न था. उनके कोई संतान नहीं थी. पति के थोड़े प्रेम से संतुष्ट अम्मा पति की सेवा करती रहती. पति का देख भर लेना; इसे ही सुख और प्रेम मानकर चलने वाली अम्मा अब बाबा के बिना अनंत समस्यों से घिरी हैं. बच्चों का खिलौना बन चुकी

कूबड़ से दोहरी अम्मा अब असहाय स्थिति को अपनी नियति स्वीकार करने पर विवश हैं.

2) असहाय अम्मा और दानव समाज - परन्तु अकेलेपन से बढ़कर उनकी समस्या विशेषता बुढ़ापे वाली है. बाबा उनके पति जब तक साथ थे, जीवन साधारण - सा था. उनकी कोई शिकायत व विशेष समस्या नहीं थी. बाबा के बाद अब विशेषत: असहाय बुढ़ापा, अपने ही लोगों की खेत - खलिहान हथियाने की लालची – दुष्ट वृत्ति, दुत्कार, तिरस्कार, अवसरवादिता, गाली – गलौच और असहायता के बीच जीने को अम्मा विवश हैं. यही वह हमारा समाज है जो अपने को मानव समाज कहलवाने की ईच्छा में दानव बन बैठा अनुभव होता है.

3) बुढ़ापे का बचपना और बूढ़ी विवश अम्मा – अम्मा की आर्थिक, शारीरिक अवस्था से बहुएँ, पुरुष, बच्चे सभी कुनबे वाले उनका मजाक उड़ाते हैं, उन्हें गाली देते हैं. अम्मा की गोद खेले बच्चे उन्हें तंग करते हैं. बच्चे लाठी से उन्हें बैल सामान हांकते हैं. रामेश्वर ने उनकी पीठ पर चढ़ कर उन्हें गिरा दिया है. वैसे अम्मा अभी परछाई भी पहचान लेती है, परतु क्या करे ? गुहार किससे लगाए; किससे न्याय मांगे ? किससे कहें, क्या कहें, हर कोई उन्हें गुस्साता, दुतकारता है. ऐसे में उदास, त्रस्त अम्मा बस रो लेती हैं, परन्तु उनका रोना हर किसी को विपती लगता है. अम्मा को इसी कारण **रोवन वारी अम्मा** यह विशेषण लग गया है. पति के मरने के बाद उन्हें लगा था कि बूढ़ी विधवा का कौन क्या बिगड़ेगा ? परन्तु उन्हीं का देवर दीवार फांद आया, तबसे अम्मा सकते में आ गई. उन्हें पहली बार डर अनुभव हुआ और तब से वे शाम का चूल्हा बुहारने, घर से बाहर आने में डरने लगती हैं.

४) **कलह से परेशानी** – घरैय्या का हर व्यक्ति अम्मा के खेत – खलिहान पर अपना अधिकार करना चाहता है. इसलिए जमीन की बुवाई से झगड़े बनते हैं, बाहर वाला भी कोई खेत कर नहीं पाता. खेत को लेकर लोगों में झगड़े हुए; लठ बज गए. परिणामत: बंजर पडी जमीन कोख में बीज बोये जाने को तरसती है. अब अम्मा को रोटी के भी लाले हैं. कुत्ता उनकी रोटी ले भागा, गुड से रोटी खाना भी आज उन्हें संभव नहीं हुआ. बिसेसर की बहू भली जिसने उन्हें रोटी खिलाई.

५) अम्मा उर्फ डुकरिया, बैल, घोडी और रोवन अम्मा – अपनी आवश्यकता में लाभ लेना और फिर कोसना यह ज़माने की रीत है, जिसे बूढ़ी अम्मा अनुभव करती हैं. कुनबे कोई न कोई उन्हें जब वेदना देता तो वे बस रो पड़ती. पीड़ा से परेशान अम्मा समय - असमय रोती हैं, सबको उनका रोना दिखाई पड़ता पर कोई उनके घाव नहीं देखता, यह उनकी विडम्बना थी. सारी बहुएँ उनसे रीति रिवाज पूछती हैं; रोते बच्चे को उनकी गोद में पटक जाती पर अम्मा के रुदन पर सब उन्हें गाली देती रहती हैं. डुकरिया, घुडिया, रोवन अम्मा अब ये गालीनुमा शब्द अम्मा के संबोधन बने हैं. पाठक के लिए ये शब्द पढ़ते हुए विचित्र लग सकते हैं, परन्तु ये शब्द अपने ग्रामीण परिवेश को प्रभावी ढंग से अभिव्यक्त करते हैं.

६) एक पड़ाव : छान - छप्पर से पक्के घर तक *- वर्षा में अम्मा के झोपड़े की स्थिति पानी – पानी होती है. सर्दी- गर्मी की स्थिति तो और विचित्र. अबके उनका छाब बनाना मुश्किल है. वे रेखा से कहती भी हैं. उन्हें रेखा सरकारी योजना से नया पक्के घर का मार्ग बतलाती है.*

व्यवस्था में लेन – देन आम बात है, पर पढी - लिखी गाँव की प्रधाननी अम्मा की स्थिति से अवगत हो; प्रधाननी अपने अधिकार का समयोचित प्रयोग करती हुई अम्मा को सरकारी योजना से नया, पक्का घर बनवा देती हैं. अपने आर्थिक हिस्से की पति की बात को भी वे दरकिनार कर. प्रधाननी अम्मा के घर पानी का नल लगवाती हैं, अब रसोई गैस भी लगवाएंगी. दुखियारी, सताई अम्मा अब नए घर की मालकिन बन, प्रधाननी की सहेली बन अपने पक्के घर में आनंद, गर्व और सुखद स्थिति का अनुभव करती हैं.

कहानी की भाषा शैली - कुल सात पृष्ठों वाली यह कहानी कथानक की अपेक्षा भाषा और वर्णन शैली से प्रभावी बन पडी है. कहानी की भाषा अपने परिवेश के अनुरूप चित्रण में जीवन्तता का दर्शन कराने में सक्षम है. कुछ शब्द अपनी प्रादेशिकता में भी सहज आशय देते हैं अपितु नए परिवेश व भाषा से हमें सहजता से जोड़ने में सक्षम और आवश्यक हैं. कहानी में आये प्रादेशिक शब्द हममें बहुत कुछ नया जोड़ते हैं, यही उनकी अर्थवत्ता का दर्शक है. शब्दों के साथ कुछ कहावतें, मुहावरें अवश्य ही अपने वातावरण को सहजता से दर्शाते हैं. यहाँ कुछ का उल्लेख मोहवश करना ही होगा. **सैज — सैज कदमों से, जोड़ — जोड़ चोटिल होना, दुःख से भूख कहाँ मिटती है, खिलौंने सा खेल जाना, कोख में एक बीज रोप जाने को तरसना, लठ बजना, लडके जवान होने पर किसी की परवाह नहीं करते, बुढापे का बचपना, चटौना (आसन), घोड़े खुल जाना,** ईत्यादी का प्रभाव निश्चित ही देखा जा सकता है.

कहानी का सुखद अंत पाठक के लिए सुखांत का आनंद तो देता ही है, एक सुखदायी यात्रा का मार्ग भी अपेक्षित व प्रशस्त करता है.अम्मा का घर बनने के आनंद का वर्णन कहानीकार सुन्दरता से करती हैं, "फिर गाँव भर में एस खुशी को बांटा. नए घर के बताशे बांटती अम्मा को अपनी धोती पुरानी लगने लगी और देह नई."3 गाँव के दुत्कार का विषय रही बूढ़ी अम्मा प्रधाननी के कारण जैसे नायिका बन गई, "पढी — लिखी, सुन्दर, दृढ संकल्प, युवा प्रधाननी और बूढ़ी, विधवा, कुबड़ी अम्मा की दोस्ती के किससे गाँव भर में कहे- सुने जाने लगे हैं"4

आधुनिक परीवेश में शिक्षा, क्षमता, अवसर व मानवतावादी दृष्टि की विजयपताका फहराती यह कहानी अपने परिवेश में बदलाव की ध्वनि है, जिसका सार्वत्रिक प्रतिध्वनित होना आवश्यक है. अम्मा व प्रधाननी के माध्यम से व्यक्ति सजगता व दायित्व बोध का चित्रण आश्चर्यजनक व अनूठा है. पुरानी व नई नारी शक्ति का क्रियमान होना एस दृष्टि से यह एक सार्थक और अनिवार्य दस्तक है.

यह कहानी सार्वत्रिक भ्रष्ट अवस्था में न्याय का दर्शन करवाती है. प्रचलित पुरुष व्यवस्था में सहिष्णु स्त्री का अपने अधिकार व स्वत्व रक्षण का निर्णायक पुनर्निर्माण का बिगुल है — **नए घर में अम्मा**. प्रशासनिक व्यवस्था, परिवेश व्याप्त गंदी, दोगली, अवसरवादी समाज मानसिकता व अधिकारग्रसित पुरुष व्यवस्था को विजयी चुनौती देती यह एक कहानी मात्र नहीं है, अपितु एक आगत गाथा है.

सन्दर्भ संकेत —

1. योगिता यादव — हंस (अक्षर प्रकाशन प्रा. लि. नई दिल्ली,) पृष्ठ 46 से
2. योगिता यादव — हंस (अक्षर प्रकाशन प्रा. लि. नई दिल्ली,) पृष्ठ 46 से
3. योगिता यादव — हंस (अक्षर प्रकाशन प्रा. लि. नई दिल्ली,) पृष्ठ 52 से
4. योगिता यादव — हंस (अक्षर प्रकाशन प्रा. लि. नई दिल्ली,) पृष्ठ 52 से